



प्रेस विज्ञप्ति

आईआईटी भुवनेश्वर में डीएसटी द्वारा मेडटेक मिशन के लिए हितधारक परामर्श कार्यशाला

'विशेषज्ञों ने मेडटेक हब और उत्कृष्टता केंद्र के निर्माण के लिए बहुआयामी सहयोग का आग्रह किया'

भुवनेश्वर, 17 अक्टूबर 2024: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर ने हाल ही में भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा मेडटेक मिशन के लिए एक हितधारक परामर्श कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में नवाचार, उद्यमिता और वैश्विक ब्रांडिंग के माध्यम से बायोमेडिकल प्रौद्योगिकी के लिए एक एकीकृत और टिकाऊ पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के तरीकों की खोज की गई। विशेषज्ञों ने वास्तविक दुनिया की जरूरतों को पूरा करने वाले उन्नत चिकित्सा उपकरणों को विकसित करने के लिए बहु-विषयक सहयोग के महत्व पर जोर दिया। इस कार्यक्रम का समन्वय आईआईटी भुवनेश्वर रिसर्च एंड एंटरप्रेन्योरशिप पार्क द्वारा किया गया था।

इस पहल का उद्देश्य जैव-चिकित्सा उत्पाद विकास के लिए एक व्यापक सक्षम बुनियादी ढांचा-सह-उत्कृष्टता केंद्र विकसित करना है, जो जैव-संगत सामग्रियों के विकास और उनके प्रसंस्करण, मॉडलिंग और सिमुलेशन के लिए सुविधाओं, प्रोटोटाइप, परीक्षण और पशु मॉडल का उपयोग करके मूल्यांकन के साथ-साथ शुरू होता है। पशु मॉडल के विकल्प. ये हब बायोमेडिकल उत्पाद विकास, पायलट पैमाने पर विनिर्माण, परीक्षण और सत्यापन और मानव संसाधन विकास के लिए भी सुसज्जित होंगे।

राष्ट्रव्यापी श्रृंखला में पांचवीं, आईआईटी भुवनेश्वर की कार्यशाला में ओडिशा, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और पूर्वोत्तर के हितधारकों ने अंतरराष्ट्रीय सहयोग, परियोजना पाइपलाइनों और टिकाऊ हब मॉडल पर चर्चा की। अपने पहले चरण में, मिशन मेडिकल इलेक्ट्रॉनिक्स, रोबोटिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सहायक उपकरण और डायग्नोस्टिक सेंसर जैसे क्षेत्रों को प्राथमिकता देगा, भारत को वैश्विक मेडटेक लीडर के रूप में स्थापित करने के लिए शिक्षा, उद्योग और स्टार्टअप में साझेदारी को बढ़ावा देगा।

इस अवसर पर बोलते हुए, प्रो. श्रीपाद कर्मलकर ने प्रतिभागियों को संक्षेप में आईआईटी भुवनेश्वर का अवलोकन प्रदान किया और उल्लेख किया कि कैसे संस्थान मतभेदों के प्रति ग्रहणशील है और विविधता का सम्मान करता है। उन्होंने यह भी साझा किया कि समय के साथ आईआईटी कैसे बदल गया है और अंतःविषय अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में विस्तार हुआ है, जो सहयोगात्मक दृष्टिकोण के लिए जगह देता है। इस संदर्भ में, उन्होंने कार्यशाला के उद्देश्य की सराहना की जिसका उद्देश्य समाज के लाभ के लिए उत्पादों और प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए लोगों को एक साथ लाना है।

अपने संबोधन में, डॉ. अनीता अग्रवाल, वैज्ञानिक- "एफ" और प्रमुख, एसईईडी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने कार्यशाला का अवलोकन प्रदान किया। उन्होंने आम जनता के लाभ के लिए चिकित्सा प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए उद्योगों सहित विभिन्न हितधारकों के बीच सहयोग के महत्व पर प्रकाश डाला।

श्री चित्रा तिरुनल इंस्टीट्यूट फॉर मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी के निदेशक डॉ. संजय बिहारी ने चिकित्सा उपकरणों, उत्पादों और प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए बहु-विषयक और सहयोगात्मक दृष्टिकोण पर बात की, जिन्हें अंतिम उपयोगकर्ताओं द्वारा स्वीकार किया जा सकता है।

डॉ. अमिताभ बंधोपाध्याय, प्रोफेसर, जैविक विज्ञान और बायोइंजीनियरिंग विभाग, आईआईटी कानपुर ने डीएसटी द्वारा मेडटेक मिशन के लिए प्रस्तावित मसौदे पर प्रस्तुति दी।

अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एएनआरएफ) से डॉ. दीप्ति कक्कड़ ठुकराल ने भी मिशन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

इस आयोजन ने चिकित्सा उपकरणों के क्षेत्र में काम करने वाले शैक्षणिक संस्थानों, नवाचार केंद्रों और उद्योगों के विभिन्न शैक्षणिक विशेषज्ञों, नेताओं और हितधारकों को एक साथ लाने के लिए एक सार्थक मंच प्रदान किया। इस सहयोग ने डीएसटी के मेडटेक मिशन के विभिन्न प्रमुख बिंदुओं पर गहन चर्चा की:

- मौजूदा उद्योगों से उत्पाद पाइपलाइनों की सोर्सिंग के लिए रणनीतियाँ
- उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) के साथ स्टार्टअप जुड़ाव के लिए मानदंड
- उत्पाद समर्थन के लिए निर्णय लेने की प्रक्रियाएँ
- सीओई के भीतर आत्मनिर्भरता पैदा करना
- उत्पाद विकास में इनक्यूबेटरों के लिए वित्तीय जिम्मेदारियाँ
- शैक्षणिक इकाइयों से पायलट उत्पादन के लिए दिशानिर्देश

आईआईटी भुवनेश्वर रिसर्च एंड एंटरप्रेन्योरशिप पार्क के सीईओ और निदेशक डॉ. शुभंकर पति ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।
